SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कबीरधाम उच्चभूमिः भू–सूचक एवं सामाजिक आर्थिक अध्ययन

राजु चन्द्राकर, शोधार्थी, भूगोल विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय ग्राम–सांकरा, कुम्हारी, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
कुबेर सिह गुरुपंच, (Ph.D.), शोध निर्देशक, प्राचार्य
देव संस्कृति कॉलेज आफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी, खपरी, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

राजु चन्द्राकर, शोधार्थी, भूगोल विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय ग्राम–सांकरा, कुम्हारी, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
कुबेर सिह गुरुपंच, (Ph.D.), शोध निर्देशक, प्राचार्य
देव संस्कृति कॉलेज आफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी, खपरी, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 02/04/2022
Revised on : -----
Accepted on : 09/04/2022
Plagiarism : 01% on 02/04/2022

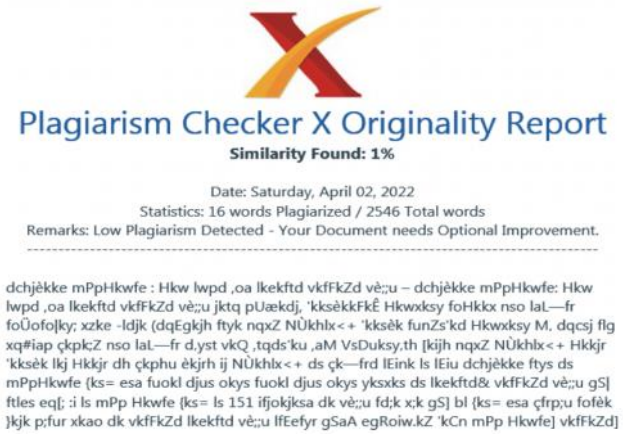
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Saturday, April 02, 2022
Statistics: 16 words Plagiarized / 2546 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

dchjèkke mPpHkwfe : Hkw lwpd ,oa lkekftd vkfFkZd vè;;u – dchjèkke mPpHkwfe: Hkw lwpd ,oa lkekftd vkfFkZd vè;;u jktq pUækdj, 'kksèkkFkÊ Hkwxksy foHkkx nso laL—fr foÜofo|ky; xzke -ldjk (dqEgkjh ftyk nqxZ NÙkhlx<+ 'kksèk funZs'kd Hkwxksy M. dqcsj flg xq#iap çkpk;Z nso laL—fr d.yst vkQ ,tqds'ku ,aM VsDuksy.th [kijh nqxZ NÙkhlx<+ Hkkjr 'kksèk lkj Hkkjr dh çkphu èkjrh ij NÙkhlx<+ ds çk—frd lEink ls lEiu dchjèkke ftys ds mPpHkwfe {ks= esa fuokl djus okys fuokl djus okys yksxks ds lkekftd& vkfFkZd vè;;u gS| ftles eq[; :i ls mPp Hkwfe {ks= ls 151 ifjokjksa dk vè;;u fd;k x;k gS] bl {ks= esa çfrp;u fofèk }kjk p;fur xkao dk vkfFkZd lkekftd vè;;u lfEefyr gSaA egRoiw.kZ 'kCn mPp Hkwfe] vkfFkZd]

शोध सार

भारत की प्राचीन धरती पर छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक सम्पदा से संपन्न कबीरधाम जिले के उच्चभूमि क्षेत्र में निवास करने वाले निवास करने वाले लोगो के सामाजिक–आर्थिक अध्ययन है, जिसमे मुख्य रूप से उच्च भूमि क्षेत्र से 151 परिवारों का अध्ययन किया गया है। इस क्षेत्र में प्रतिचयन विधि द्वारा चयनित गांव का आर्थिक सामाजिक अध्ययन किया गया हैं।

मुख्य शब्द

उच्च भूमि, आर्थिक, सामाजिक.

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध प्रबंध कबीरधाम जिले में स्थित लोहारा विकासखंड में सम्मिलित दानीघठोली एवं टिपनी गांव के सामाजिक आर्थिक जीवन का अध्ययन है। भौगोलिक भू–दृश्य में कबीरधाम उच्च भूमि अध्ययन में भूगोल विदों का हमेशा ही ध्यान आकृष्ट किया है। इसी संदर्भ में हमारा क्षेत्रीय अध्ययन धान का कटोरा कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ का एक भाग है। भारत गांवो का देश है। गांव भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदंड हैं। भारत की राष्ट्रीय आय में सर्वाधिक योगदान कृषि व सहायक क्रियाओं का है। अतः गांव के समुचित विकास से ही देश का विकास संभव है। गांधी जी ने कहा था कि भारत का ह्रदय गांव में बसता है। यदि भारत को देखना है तो गांव को देखना चाहिए। उनकी दृष्टि से प्रत्येक गांव को वैसे ही स्वतंत्र आत्मनिर्भर एवं शक्तिशाली होना चाहिए जैसे कि एक सत्य होता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध इसी तारत्मय में एक कड़ी की भांति कार्य करने के लिए चुना गया हैं। ग्राम दानीघठोली एवं टिपनी के भौतिक सामाजिक व आर्थिक अध्ययन के

अंतर्गत गांव की उत्पत्ति से लेकर उसमें विभिन्न काल खंडों का जैसे गांव की बाल्यावस्था उसकी युवावस्था और व्यवस्था को देखने का प्रयास किया है, जिसके अंतर्गत गांव की विभिन्न जानकारियां जीवन स्तर सामाजिक आर्थिक स्थिति गांव की स्थिति विस्तार भूमि उपयोग जनसंख्या व्यवसाय एवं अन्य पहलू को देखने तथा अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है।

भारत जैसे कृषि पर निर्भर देश में गांव में उत्पादित किए जाने वाले फसलों का अपना विशेष महत्व है क्योंकि गांव में अपने खाद्यान्न पूर्ति के साथ–साथ नगरों में निवास करने वाली जनसंख्या के लिए अवश्य खाद पदार्थ की पूर्ति करता है। इसके साथ–साथ ही एक और जहां ग्रामीण जनसंख्या मजदूरी के रूप में उपयोग में लाई जाती हैं, वहीं दूसरी ओर भारत के गांव विभिन्न उद्योग को विकसित करने में का कार्य करते हैं, जैसे कुटीर उद्योग आदि हैं। इस प्रकार क्षेत्रीय अध्ययन में कबीरधाम उच्च भूमि क्षेत्र का अध्ययन एवं लोहारा विकासखंड में जो कबीरधाम जिले के अंतर्गत गांव आता है। इस क्षेत्र में प्रतिचयन विधि द्वारा चयनित गांव का आर्थिक सामाजिक अध्ययन सम्मिलित हैं।

भूगोल में क्षेत्रीय सर्वेक्षण का महत्व

"भूगोल विषय के अंतर्गत पृथ्वी के धरातल इनके स्वरूप, भाग, लक्षण, राजनीतिक विभाजन, जलवायु, उत्पादन, जनसंख्या आदि के अध्ययन को सम्मिलित किया जाता है"*– रोजर मिन्सुल*

अतः कहा जा सकता है कि भूगोल प्राकृतिक और मानव के बीच अंतःसंबंधों का अध्ययन करता है। पृथ्वी के स्वरूप के कारण अलग–अलग विशेषता के आधार पर छोटे–छोटे प्रदेशों में बांटकर अध्ययन किया जाता है जिससे वृहद भूभाग को क्रमबुद्ध अध्ययन किया जा सके और प्रदेशों में विभिन्नता का सरलता से ज्ञान हो सके। इस अध्ययन का कार्य भूगोल की एक स्वतंत्र शाखा प्रादेशिक भूगोल में किया जाता है।

भूगोल में दी गई क्षेत्रीय अध्ययन की परिभाषा और विषय क्षेत्र के निरूपण उपरांत यही निष्कर्ष निकलता है कि क्षेत्रीय भूगोल, भूगोल की महत्वपूर्ण शाखा हैं। इस विज्ञान का अध्ययन मूलतः भू–दृश्य प्राकृतिक, मानवी और विभिन्न परिवेश में मानवीय क्रियाकलाप के विवेचन और विश्लेषण हैं। भूगोल के विद्यार्थी प्रारंभ से ही विश्व के विभिन्न महाद्वीपों और मानचित्र के आधार पर अध्ययन करते रहे हैं, परंतु इस स्थिति का वास्तविक ज्ञान संबंधित प्रदेशों के पर्यटन या अवलोकन द्वारा संभव होता है। इस सतत् परिवर्तनशील पृथ्वी पर पूर्ण वर्णित में अवलोकन द्वारा ही संभव है जिसका निरूपण उस क्षेत्र के तथ्यों में अवलोकन करके किया जा सकता है। यही नहीं भौगोलिक अध्ययन का महत्वपूर्ण यंत्र अर्थात् मानचित्र निर्माण भी प्रदेश से संबंधित विभिन्न प्रकार के आंकड़ों के एकत्रीकरण विभिन्न विधियों द्वारा किया जाता है। यह सत्य है कि क्षेत्र विशेष अवलोकन से ऐसे तत्वों का ज्ञान होता है जिस के संबंध में पुस्तक के प्रमुख रहती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

हर अध्ययन कार्य का निश्चित उद्देश्य होता है जिससे उस विषय विषय वस्तु का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सके। हमारे क्षेत्रीय अध्ययन का निम्नलिखित उद्देश्य हैः

1. कबीरधाम उच्च भूमि क्षेत्र के ग्रामों का सामाजिक व आर्थिक सर्वेक्षण करना जिससे उस क्षेत्र के निवासियों का जीवन स्तर एवं व्यवसायिक की स्थिति का ज्ञान हो सके।
2. उच्च भूमि क्षेत्र में स्थित ग्राम के सामाजिक, आर्थिक क्रियाकलाप, रहन–सहन, रीति–रिवाज, खानपान, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं यातायात का प्रभाव।
3. कबीरधाम उच्च भूमि क्षेत्र के भूमि का कृषि व ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र का चुनाव

किसी भी अध्ययन हेतु क्षेत्र का चुनाव के कुछ विशेष कारण होते हैं। प्रस्तुत कबीरधाम के उच्च भूमि क्षेत्र को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुने जाने के निम्न कारण हैंः

1. कबीरधाम उच्च भूमि क्षेत्र पर नगरी क्षेत्र का ग्रामीण क्षेत्रों पर प्रभाव का अध्ययन क्षेत्र का उपजाऊ भूमि तथा

कृषि पर उनके प्रभाव का ध्यान।

2. कबीरधाम उच्च भूमि क्षेत्र के भौतिक सामाजिक आर्थिक परिस्थिति से परिचित करना।

आंकड़ों का महत्व इस शोध प्रबंध में वही होता है जो व्यक्ति को जीवित रखने के लिए विशिष्ट कारकों का होता है। गांव से संबंधित विभिन्न प्रकार के आंकड़े प्राप्त करने के लिए विभिन्न स्रोत को तलाशना पड़ता है। प्राथमिक आंकड़ों को एकत्रित करने के स्रोत की विधि को अपनाया गया। इसके लिये अनुसूची को स्वयं जाकर भरा गया। सर्वेक्षण ग्राम की जनसंख्या, रहन–सहन, रीति–रिवाज, वेशभूषा आदि को एकत्र किया गया जबकि भूमि उपयोग से संबंधित जानकारी भूमि उपयोग गोषवारा, खसरा मिलान, खरीद जींस वार, कृषि जींस वार, तितम्मा मिलान, मिलान खसरा इत्यादि।

कबीरधाम

सामान्य परिचय

कबीरधाम जिले का गठन 1998 में हुआ तथा 2003 में कवर्धा से इसका नाम कबीरधाम नाम में परिवर्तन हुआ था। कबीरधाम का कुल क्षेत्रफ़ल 4,447.05 वर्ग किलोमीटर है। इस जिले के अन्तर्गत 5 तहसील, 4 विकासखंड, 1 नगर पालिका परिषद्, 5 नगर पंचायत, 461 ग्रामपंचायत 1006 गाँव है। 2000 के जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 8,22,526 है जिसमे पुरुष की जनसंख्या 4,12,028 तथा महिला की जनसंख्या 4,10,418 है। जिले का जनसंख्या घनत्व 194 प्रति वर्ग किलो मीटर है। कवर्धा जिले की साक्षर व्यक्ति की जनसंख्या 4,14,167 है, जिनमे पुरुष की जनसंख्या 2,45,803 तथा महिला की जनसंख्या 1,65,664 है कबीरधाम जिले का लिगानुपात 996 है। कवर्धा जिले से प्राप्त होने वाले प्रमुख खनिज लौहअयस्क, बाक्साइट और चुना पत्थर एवं सोपस्टोन पाया जाता है। उद्योग में हरिन चपरा–औद्योगिक क्षेत्र, भोरमदेव शक्कर कारखाना और सरदार वल्लभभाई पटेल सरकारी शक्कर कारखाना व गुड़ फैट्री है। अभ्यारण्य भोरमदेव अभ्यारण्य है। यहाँ के मुख्य नदी हॉप नदी और बंजर नदी है।

सामाजिक सर्वेक्षण

सर्वेक्षित गाँव का परिचय प्रस्तुत शोध क्षेत्रीय प्रतिवेदन छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के अन्तर्गत सामाजिक आर्थिक अध्ययन एक रूप में प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में सहसपुर लोहरा विकासखंड के ग्राम दानीघठोली का आर्थिक, सामाजिक सम्बन्धित गाँव की जनसंख्या, लोगो का रहन–सहन, कृषि, शिक्षा, व्यवसाय आदि का उद्वरित किया गया है। यहाँ पर सर्वेक्षित ग्राम दानिघठोली का सामान्य परिचय दिया है।

दानीघठोली

प्रस्तुत ग्राम सहसपुर लोहरा विकासखंड का एक अर्ध विकसित गाव है। यह गाँव कबीरधाम जिले से 30 किलोमीटर दुरी में स्थित है। लेकिन सर्वेक्षित परिवारों की संख्या 71 है तथा जनसंख्या 386 है। यहाँ विभिन्न जाति के परिवार के लोग रहते है, जिसमे अनुसूचित जाति में गोड, लोहार, अन्य पिछड़ा वर्ग में तेली, राउत, कुर्मी इत्यादि। यहाँ शिक्षा के सुविधा हाई स्कूल तक है। इस गाँव में स्वास्थ्य केंद्र की सुविधा है। यहाँ बैंकिंग सुविधा का अभाव है, पर लोग बैंकिंग सम्बन्धित कार्य बेब सेंटर से कार्य करवाते है। यह ग्राम पक्की सड़क जिला मुख्यालय से जुड़ा हुआ है। यह अकेला गाँव एक ग्राम पंचायत है। यहाँ पर अनुसूचित जनजाति का महिला सरपंच है। दानीघठोली में जल के स्रोत के लिए कुआँ, नल, हैण्ड पम्प एवं तालाब है। तालाबो की संख्या 4 है, हेंडपंप की संख्या 7 है और कुओं की सख्या 4 है।

सारणी क्रमांक 1: सर्वेक्षित ग्रामो कुल जनसंख्या 2021

क्रमांक	गाँव का नाम	कुल परिवारों की संख्या	कुल जनसंख्या	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
1	दानीघठोली	071	386	199	36.60	187	37.96
2	टिपनी	080	442	210	38.09	231	34.63
	कुल	151	828	409	74.69	418	72.59

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

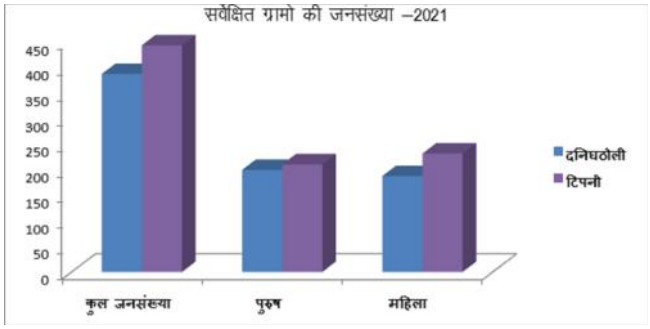

सारणी क्रमांक 2: सर्वेक्षण ग्राम का लिंगानुपात 2021

क्रमांक	गांव	कुल जनसंख्या	पुरुष	महिला	लिंग अनुपात
1	दानीघठोली	386	199	187	0939
2	टिपनी	442	210	231	1100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

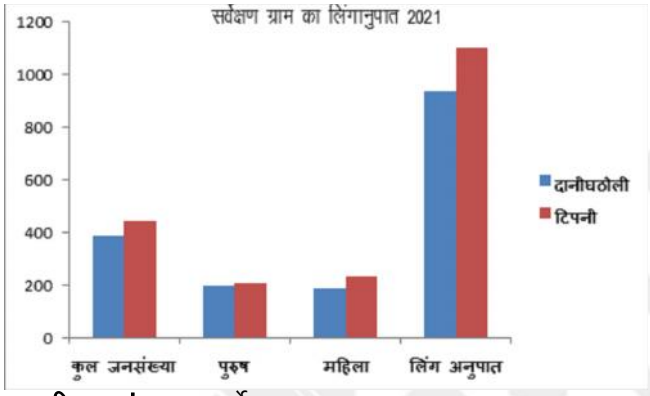

सारणी क्रमांक 3: सर्वेक्षण ग्राम का आयु सरचना – 2021

दानीघठोली							टिपना					
आयु वर्ग	**कुल जनसंख्या**	**प्रतिशत**	**पुरुष**	**प्रतिशत**	**महिला**	**प्रतिशत**	**कुल जनसंख्या**	**प्रतिशत**	**पुरुष**	**प्रतिशत**	**महिला**	**प्रतिशत**
00–06	029	07.51	13	03.36	16	04.14	028	06.3	014	04.36	014	06.66
07–14	047	12.17	21	05.44	26	06.73	076	17.19	035	15.15	041	19.52
15–29	087	22.53	42	10.88	45	11.65	129	29.18	080	34.63	049	32.33
30–39	113	29.27	57	14.76	56	14.50	069	15.61	030	12.98	039	18.57
40–49	071	18.36	41	10.62	30	07.77	059	13.34	030	12.98	029	13.80
50–59	029	07.54	19	04.92	10	02.59	040	09.05	020	08.65	019	09.04
>60	010	02.90	07	01.18	03	00.77	041	09.27	022	09.52	019	09.04
कुल	386	100	200	50.18	186	48.15	442	100	231	100	210	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

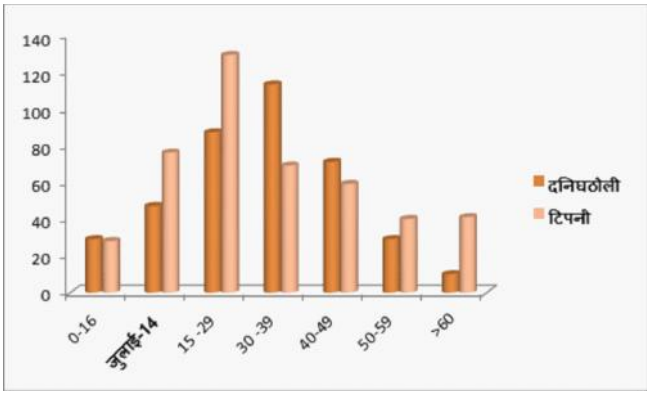

सारणी क्रमांक 4

	दानीघठोली			टिपनी			
क्रमांक	गाँव	कार्यशील जनसंख्या	प्रतिशत	अकार्यशील जनसंख्या	प्रतिशत	कुल जनसंख्या	प्रतिशत
1	दानीघठोली	300	77.72	086	22.27	386	100
2	टिपनी	270	61.08	172	28.95	442	100
	कुल	570	68.84	258	31.15	828	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

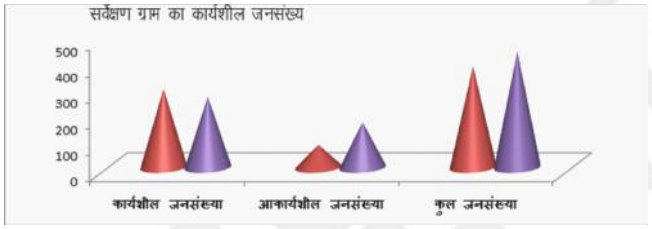

सारणी क्रमांक 5: सर्वेक्षण ग्राम का शैक्षिक जनसंख्या

क्रमांक	गाँव	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत	कुल
1	दानीघठोली	159	41.19	126	32.64	285
2	टिपनी	146	52.32	133	47.67	279
	कुल	305	93.51	259	79.67	564

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

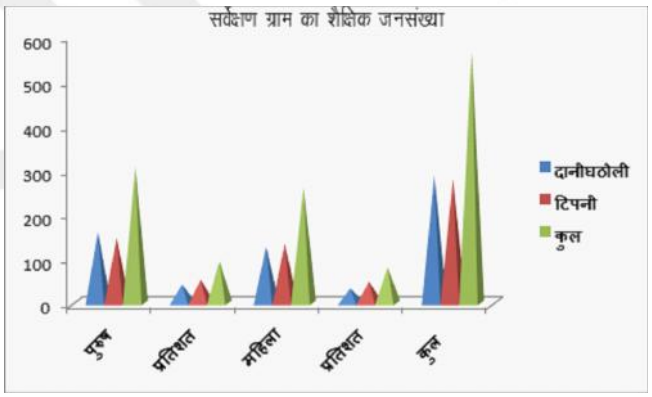

सारणी क्रमांक 6: सर्वेक्षण ग्राम का अशैक्षिक जनसंख्या

क्रमांक	गाँव	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत	कुल
1	दानीघठोली	35	09.06	41	10.62	076
2	टिपनी	25	05.65	56	12.66	081
	कुल	78	14.71	97	23.28	157

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

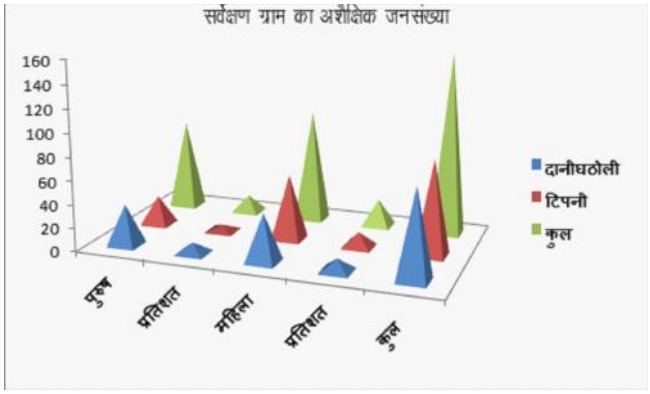

सारणी क्रमांक 7: दानीघठोली में शिक्षा का स्तर

क्रमांक	शिक्षा का स्तर	कुल	प्रतिशत	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
1	केवल सक्षार	25	8.06	17	5.48	8	2.58
2	प्राथमिक	70	22.85	38	12.25	32	10.32
3	माध्यमिक	82	26.45	38	12.25	44	14.19
4	10 + 2	91	29.35	58	18.70	33	10.64
5	स्नातक	31	10.00	18	5.80	13	4.19
6	स्नोततर	11	3.54	7	2.25	4	1.9
7	अन्य	0	—	0	0	0	0
	कुल	310	100.00	176	56.77	134	43.22

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

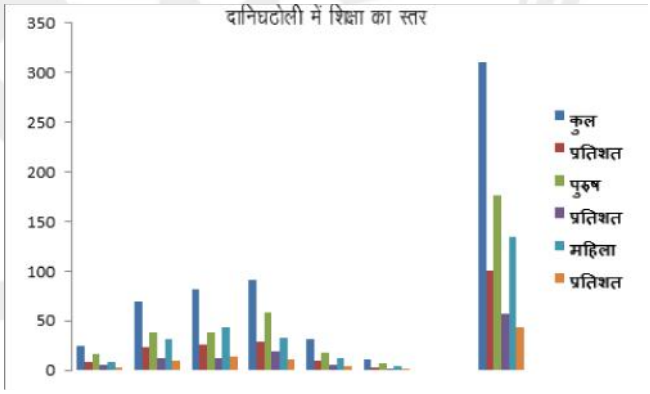

सारणी क्रमांक 8: सर्वेक्षण ग्रामीण परिवारों में कृषि जोत का आकार

क्रमांक	गाँव	भूमिहीन	प्रतिशत	सीमांत	प्रतिशत	लघु	प्रतिशत	मध्य	प्रतिशत	वृहत	प्रतिशत
1.	दानीघठोली	0	0	16.18	16.56	20	19.72	23.2	22.87	32.4	31.95
2.	टिपनी	0	0	29.00	64.44	11	24.44	01.0	02.22	04.0	08.80
	योग / कुल	0	0	45.18	81.00	31	44.16	24.2	25.0	36.40	40.83

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

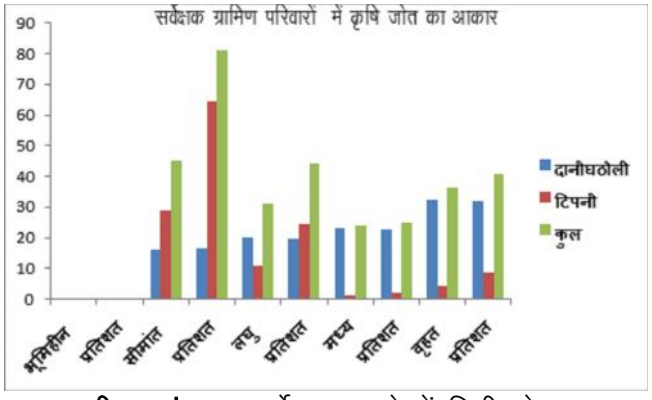

सारणी क्रमांक 9: सर्वेक्षक ग्रामो में मिट्टी के प्रकार

क्रमांक	गाव	दानीघठोली			टिपनी	
	मिट्टी के प्रकार	एकड	कुल हेक्टेयर	प्रतिशत	कुल हेक्टेयर	प्रतिशत
1	कन्हार	020	08.0	08.65	17	38.64
2	दोरसा	015	06.0	06.49	00	00.00
3	मटासी	150	60.0	64.93	12	27.77
4	भाटा	016	06.4	06.92	15	34.09
5	कछारी	030	12.0	12.71	00	00.00
	कुल	231	92.4	100	44	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

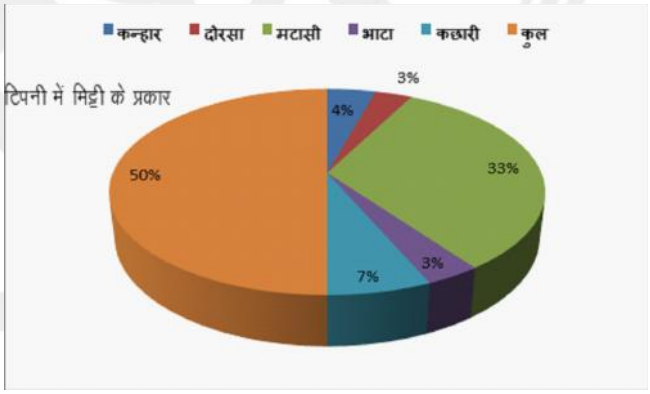

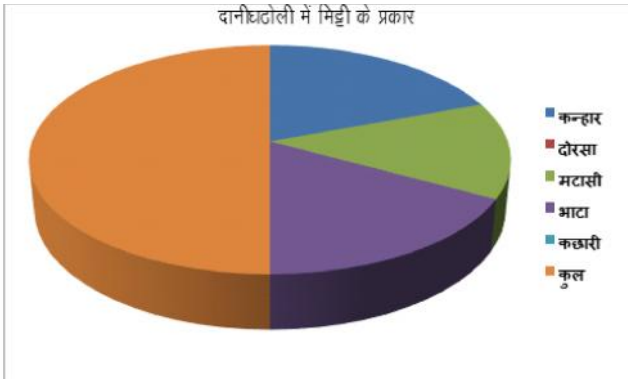

सारणी क्रमांक 10: सर्वेक्षण ग्रामो में धान का वार्षिक प्रतिशत

क्रमांक	गाव	दानीघठोली		टिपनी	
	भूमि धारक वर्ग	धान क्विंटल	प्रतिशत	धान क्विंटल	प्रतिशत
1	भूमिहीन	0	0	0	0
2	सीमांत	610	12.21	549	16.07
3	लघु	650	13.01	916	26.82
4	मध्य	630	12.61	200	5.85
5	वृहत	3105	62.16	1750	51.24
	कुल	4995	100.00	3415	100.00

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

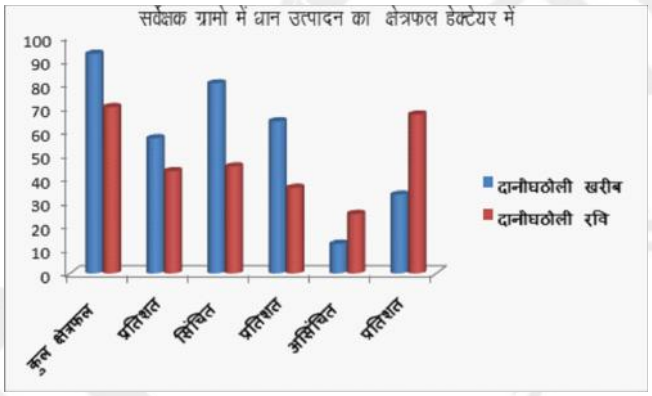

निष्कर्ष

हमारा क्षेत्रीय अध्ययन कबीरधाम जिले के उच्च भू सूचक एवं सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण कबीरधाम जिला छत्तीसगढ़ में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र सुविधा की दृष्टि से दो भागों में रखकर अध्ययन किया गया है, पहला कबीरधाम जिले की उच्च भूमि का भौतिक अध्ययन एवं सर्वेक्षण तथा दूसरा भाग में कबीरधाम जिले में स्थित गांव का कबीरधाम जिले में स्थित गांव का प्रतिदर्श विधि द्वारा चयन कर सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण किया।

प्रथम भाग में भौतिक सर्वेक्षण के अंतर्गत हमने कबीरधाम जिले की उच्च भूमि से किया गया हैं जो कि छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के सहसपुर लोहारा विकासखंड में स्थित है। कबीरधाम जिले की स्थिति अक्षांश 1.32″ से 1.35 उत्तरीय देशांतर 80 48″ से 81 28″ पूर्वी इस का कुल क्षेत्रफल 4, 447.05 वर्ग किलोमीटर है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 353 मीटर हैं।

कबीरधाम जिले की उच्च भूमि क्षेत्र की अधिकतम ऊंचाई 353 से 360 मीटर के बीच हैं। यदि इस क्षेत्र की

भूगर्भिक संरचना को देखा जाए तो पुराने चट्टान जिसका निर्माण लावा के ठंड होने के फलस्वरूप हुआ है, जो अत्यंत गहराई पर स्थित हैं। धारवाड से समूह का निर्माण चट्टान की अपरदन से निकाले गए पदार्थ अत्यधिक दबाव के कारण कायांतरित हो गया। कडप्पा क्रम के चट्टान में स्टाइल इसलिए चुना पत्थर तथा क्वार्टर ज्वाइन प्रति मुख्य रूप से मिलती हैं, क्वार्टर जेट के ऊपर मुलायम पर चट्टान के रूप में लौह अयस्क का निक्षेपित है। यहां बॉक्साइट व चूना पत्थर पाया जाता है जिससे भौगोलिक स्वरूप के आधार पर यह क्षेत्र उच्च भूमि है।

कबीरधाम उच्च भूमि दोटू नाला अपवाह क्षेत्र समुद्र तल से औसत ऊंचाई लगभग 360 मीटर हैं। कबीरधाम उच्च भूमि के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र में एक ही अफवाह क्षेत्र हैं, दोटू नाला अपवाह तंत्र। यह सहसपुर लोहारा के पास से निकल कर पूर्व की ओर प्रभावित होती हैं। दोटू नाला का इस क्षेत्र का विशेष महत्व है क्योंकि इस नाला से कृषि भूमि को सिंचित किया जाता है। यह क्षेत्र में पेड़ पौधे भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इस क्षेत्र में पतझड़ प्रकार के वृक्ष मिलते हैं जिसमें आम, महुआ, बरगद, पीपल, बबूल, नीम आदि के वृक्ष प्रमुख हैं।

क्षेत्र की जलवायु उष्ण एवं उपोष्ण कटिबंध जलवायु हैं तथा वर्षा मानसूनी हवाओं से जो दक्षिण पूर्वी अरब सागर से होते हुए प्रवेश करती हैं। इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 40 से 120 सेंटीमीटर तक वर्षा होती हैं, तथा यहां का तापमान 27 से 28 डिग्री सेल्सियस होता है। गर्मी के दिनों में 45 डिग्री सेल्सियस तक पार हो जाता है।

द्वितीय भाग सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण के अंतर्गत ग्राम दानीघठोली के सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण क्षेत्र में पिछड़ा वर्ग की जाति की बहुलता है। यहां मुख्यतः साहू, सतनामी, सिन्हा; राजपूत, रावत, गोड आदि जातियों की संख्या अधिक है, इसके अलावा लोहार, पनिका, केवट देवार, मोची, आदि जाति भी निवास करते हैं। क्षेत्र में लिंग अनुपात 939 है, जो की राष्ट्रीय लिंगानुपात से कम है। ग्राम में विभिन्न जाति के लोग निवास करते हैं। सर्वे क्षेत्र ग्राम के विवाहित स्तर व विवाह की आयु देखे तो स्पष्ट है कि यहां लड़कियों का विवाह 18 वर्ष से पहले भी हुआ है और 18 वर्ष के बाद भी हुआ है, लेकिन शिक्षा का स्तर एवं जागरूकता के कारण लोग स्त्री व पुरुष का विवाह 18 वह 21 वर्ष के बाद ही करते हैं। इस ग्राम में शिक्षा का स्तर मध्य हैं, यहां पुरुष की साक्षरता 41.19 प्रतिशत महिला 32.64 प्रतिशत है, कुल 73 प्रतिशत साक्षरता है।

अध्ययन के क्षेत्र में ग्राम में मुख्यतः धान की फसल उगाई जाती हैं। निष्कर्ष रूप में यह कहा जाता है कि सर्वे क्षेत्र ग्राम में निवासरत व्यक्तियों की जीवन स्तर मध्ययम है। यहां पर कृषि मजदूर कृषक की संख्या अधिक है। कृषको के पास 2 हेक्टेयर से कम जमीन है, इससे केवल अपनी न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति ही कर पाते हैं जिस कारण इसका जीवन स्तर, निम्न स्तर का रहता है।

भारत एक कृषि प्रधान एवं गांवो का देश हैं। जब तक गांव का समुचित विकास नहीं होगा देश का विकास संभव नहीं है, क्योंकि देश का 68.8 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती हैं। किसी भी क्षेत्र के विकास में परिवहन एवं संचार का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। सर्वेक्षण ग्राम में यातायात के साधन बहुत अच्छे हैं, यहाँ पक्की सड़क से जिला मुख्यालय को जोड़ता है, जिसमें उनका समुचित विकास हो रहा है।

सुझाव

शिक्षा एवं स्वास्थ्य जागरूकता

अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा सुविधा व स्वास्थ्य सुविधा हैं जिसके कारण इस क्षेत्र में जागरूकता आ रही हैं। अतः उच्च शिक्षा एवं उच्च स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराकर क्षेत्रों का और अधिक विकास किया जा सकता है।

सिंचाई की सुविधा व व्यापारिक फसलों को प्रोत्साहन

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई साधनों का अभाव है जिसमें इन क्षेत्रों में फसल उत्पादन में समानता एवं एक ही फसल प्राप्त किया जाता है। अतः सिंचाई की साधनों का व्यवस्था कर, कृषक व्यापारिक फसलों तथा वैज्ञानिक पद्धति से कृषि करने का प्रशिक्षण देना, जिससे कृषकों का जीवन स्तर उच्च किया जा सके।

संदर्भ सूची

1. गौतम, अलका, (2005), *आर्थिक भूगोल के मूलभूत तत्व,* शारदा पुस्तक भवन, पब्लिकेशन एवं डिसटीब्यूटर्स 11 यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद संक्रमण।
2. पंडा, बीपी, (1995), *जनसंख्या भूगोल,* मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ, अकादमी रवींद्रनाथ ठाकुर मार्ग भोपाल, 462003, प्रीति, संक्रमण।
3. मांमोरिया, चतुर्भुज, *मानव भूगोल,* आगरा साहित्य भवन पब्लिकेशन।
4. त्रिपाठी, कैप, लेंद्र, (2001) *छत्तीसगढ़ का भूगोल,* शारदा प्रकाशन।
5. त्रिपाठी, आरडी, जानकी, (2002), *जनांकिकी एवं जनसंख्या अध्ययन,* वसुंधरा प्रकाशन ,23 दाउदपुर, गोरखपुर, पूर्ण मुद्रण।
6. तिवारी, रामचंद्र, (1996) *कृषि भूगोल,* प्रयाग पुस्तक भवन।
7. सीमा, रविंद्र, (2002) *भू आकृति विज्ञान,* वसुंधरा प्रकाशन, 236, दाउदपुर, गोरखपुर।
8. चांदना, आरती, *जनसंख्या भूगोल,* कल्याणी, 1 माचर्त्र लुधियाना।

****